दिसम्बर: 2025 वर्ष : 9 अंक : 3

सिफरी मासिक समाचार

क्रिसमस पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

“असफलता मात्र फिर से कार्यारम्भ करने की प्रेरणा होती है, इस बार और अधिक बुद्धिमत्ता से।” हेनरी फोर्ड

सर्वप्रथम आप सभी को क्रिसमस की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई। प्रेम और सौहार्द का पर्व, क्रिसमस का इतिहास कई हजार साल पुराना है। इस पर्व पर क्रिसमस ट्री का विशेष महत्व होता है क्योंकि इसे जीवन की निरंतरता का प्रतीक माना जाता है।

संस्थान का मासिक न्यूजलेटर के इस अंक में नवंबर, 2025 में संस्थान के गतिविधियों और कार्यक्रमों की झलकियां प्रस्तुत है।

दिसंबर का महीना वर्ष का अंतिम माह है जो नए वर्ष के आगमन का संदेश लेकर आता है। साथ ही हमें यह प्रेरणा देता है कि हम सभी एक आत्म विश्लेषण करें ताकि नए वर्ष के लिए लक्ष्य सुनिश्चित करने के साथ अपने जीवन को और भी सफल बनाने के लिए प्रयास कर सकें । वर्ष 2018–2023 की अवधि के लिए पंचवर्षीय समीक्षा दल की बैठक बैरकपुर में आयोजित की गई। पंचवर्षीय समीक्षा दल ने उन्होंने वैज्ञानिकों की प्रतिबद्धता, अनुसंधान गुणवत्ता में निरंतर सुधार तथा राष्ट्रीय मत्स्य विकास में संस्थान के बढ़ते योगदान की प्रशंसा की ।

मैं पुनः आप सभी को क्रिसमस पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ और बधाई देता हूँ और आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर ने सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 का आयोजन किया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर ने 27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक "सतर्कता: हमारी साझा जिम्मेदारी" थीम के तहत सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। यह सप्ताह 27 अक्टूबर 2025 को औपचारिक उद्घाटन समारोह के साथ शुरू हुआ, जिसमें डॉ. डी. के. मीना, सतर्कता अधिकारी, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने स्वागत संबोधन दिया और सप्ताहभर की गतिविधियों की रूपरेखा प्रस्तुत की।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. बासंता कुमार दास, निदेशक, ICAR-CIFRI द्वारा सतर्कता शपथ के आयोजन से हुई, जिसमें सभी अधिकारी और कर्मचारी शामिल हुए, जबकि कई प्रतिभागियों ने ऑनलाइन भाग लिया। पूरे परिसर को भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों और संस्थान की पारदर्शिता एवं ईमानदारी के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाने वाले पोस्टर, बैनर और प्लेकार्ड से सजाया गया।

28 अक्टूबर को, CIFRI के कर्मचारियों ने मानव श्रृंखला का निर्माण किया और डासपारा क्षेत्र तक वॉकथॉन आयोजित किया, ताकि जनता में

जागरूकता फैलाई जा सके और भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित किया जा सके। उसी दिन संस्थान के कर्मचारियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

सप्ताह के दौरान 29 अक्टूबर को विचार-विमर्श भाषण प्रतियोगिता, 30 अक्टूबर को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और 31 अक्टूबर को निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें पीएमश्री केंद्रीय विद्यालय और सेंट्रल मॉडल स्कूल, बैरकपुर के वरिष्ठ छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में संस्थान के वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक कर्मचारी, शोध छात्र और संविदा कर्मी सहित कुल 24 प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। प्रतियोगिता में आठ टीमों ने हिस्सा लिया, प्रत्येक टीम में तीन सदस्य थे। प्रश्न विषयों में सतर्कता जागरूकता, भ्रष्टाचार निरोधक और प्रवर्तन तंत्र, भ्रष्टाचार पर आधारित भारतीय फिल्में और समसामयिक घटनाएँ शामिल थीं।

इस क्विज़ ने प्रतिभागियों को सतर्कता संबंधित विषयों का ज्ञान परखने, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों के प्रति जागरूकता बढ़ाने और संस्थान में नैतिकता और निष्पक्षता की संस्कृति को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान किया। प्रतियोगिता के दौरान रोचक प्रश्न और उत्तरों के माध्यम से कर्मचारियों की नैतिक प्रशासन के प्रति समझ और जागरूकता भी बढ़ी।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह का समापन 3 नवंबर 2025 को समापन समारोह के साथ हुआ। इस अवसर पर डॉ. डी. के. मीना ने उपस्थितों का स्वागत किया और सप्ताहभर आयोजित गतिविधियों जैसे वॉकथॉन, मानव श्रृंखला और विभिन्न प्रतियोगिताओं की समीक्षा प्रस्तुत की। डॉ. राहुल दास, वैज्ञानिक, CIFRI ने विजेताओं के नाम घोषित किए, और मुख्य अतिथि श्री दिवेय सेठी, IRS, उप-निदेशक, GST, कोलकाता ने विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र ने अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में 'फसलोपरांत प्रबंधन एवं अपशिष्ट उपयोग' विषयक NABARD प्रायोजित 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र ने 27–31 अक्टूबर 2025 को HOUSEFED कॉम्प्लेक्स, दिसपुर में NABARD प्रायोजित 5-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "Post-harvest Management and Utilization of Waste in Inland Fisheries" का सफल आयोजन किया।

कार्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें मत्स्यपालक, क्षेत्रीय विस्तार कार्यकर्ता, छात्र और असम के 7 जिलों (नागांव, मोरीगांव, दारांग, बिस्वनाथ, कामरुप, नलबारी, बारपेटा) के अन्य हितधारक शामिल थे। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. सिमंकु बोरा, वैज्ञानिक और डॉ. ए. के. यादव, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया, और इसका संचालन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI, बैरकपुर और डॉ. एस. के. मज़ही, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी के मार्गदर्शन में किया गया। इसका उद्देश्य मत्स्यपालकों/मछुआरों को वैज्ञानिक फसलोपरांत प्रबंधन, मूल्य संवर्धन और मछली अपशिष्ट के कुशल उपयोग के बारे में जागरूक करना था ताकि नुकसान कम हो, उत्पाद गुणवत्ता बेहतर हो और मत्स्य पालन क्षेत्र में सतत आय सृजन बढ़े।

उद्घाटन सत्र 27 अक्टूबर 2025 को संपन्न हुआ, जिसमें श्री लोकेन दास, चीफ जनरल मैनेजर, NABARD असम क्षेत्रीय कार्यालय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और कर्नल अभिषेक, निदेशक, UIDAI, अतिथि विशेष थे। श्री लोकेन दास ने असम में मत्स्यपालकों की क्षमता निर्माण के लिए ICAR-CIFRI के प्रयासों की सराहना की और मत्स्य पालन में मूल्य संवर्धन एवं अपशिष्ट उपयोग के महत्व को रेखांकित किया। कर्नल अभिषेक ने प्रतिभागियों को आधुनिक फसलोपरांत प्रथाओं को अपनाने और मत्स्य पालन में प्रौद्योगिकी एवं उद्यमिता से युवाओं के लिए नए अवसर सृजित करने का आह्वान किया।

पाँच दिनों के प्रशिक्षण में 16 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें फसलोपरांत प्रबंधन, मछली प्रसंस्करण, संरक्षण, मूल्य संवर्धन और अपशिष्ट उपयोग जैसे विषय शामिल थे। सत्रों का

संचालन ICAR-CIFRI, ICAR-CIFT, असम कृषि विश्वविद्यालय (AAU), मत्स्य विभाग (DoF), असम मत्स्य विकास निगम, NABARD, NFDB और कृषिविज्ञान केन्द्रों (KVKs) के विशेषज्ञों द्वारा किया गया। प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रदर्शन और इंटरेक्टिव सत्र के माध्यम से अनुभव प्राप्त कराने के लिए फील्ड-कम-एक्सपोज़र विज़िट का आयोजन भी किया गया, जो पंचतीर्थ एक्वार्गो प्राइवेट लिमिटेड, हाजो, कामरुप में हुआ। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त ज्ञान और कौशल की सराहना की और बताया कि यह उनके लिए फसलोपरांत वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाने में सहायक होगा, जिससे उत्पादकता और आय में सुधार संभव होगा।

समापन सत्र में डॉ. आर. बॉर्डोलोई, निदेशक, एक्सटेंशन एजुकेशन इंस्टिट्यूट, NE Region, गुवाहाटी मुख्य अतिथि थे। उन्होंने प्रतिभागियों को समुदायों में परिवर्तनकारी एजेंट बनने और मछली अपशिष्ट के कुशल उपयोग एवं फसलोपरांत नुकसान को कम करने के लिए प्रशिक्षण में प्राप्त ज्ञान को लागू करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रमाणपत्र और प्रशिक्षण मैनुअल वितरित किए गए और डॉ. यादव द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने खलसी वेटलैंड, नादिया में 'जन जातीय गौरव वर्ष' समारोह मनाया

4 नवंबर 2025 को आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने जन जातीय गौरव वर्ष पखवाड़ा (1–15 नवम्बर) के अंतर्गत खलसी वेटलैंड, नादिया, पश्चिम बंगाल में एक सक्रिय आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें जनजातीय icons भगवान बिरसा मुंडा की विरासत को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में उन्होंने छोटानागपुर पठार के जनजातीय अधिकारों के संवर्धन में बिरसा मुंडा की भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री गणेश टांती और श्री जयदेव सरदार ने बिरसा मुंडा के जीवन और उनके दीर्घकालिक प्रभाव पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

"स्वास्थ्य और पोषण" विषय पर आधारित कार्यक्रम में डॉ. आर. के. मन्ना, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, ने प्रतिभागियों को वेटलैंड पारिस्थितिकी तंत्र में पाई जाने वाली स्मॉल इंडिजिनस फिशेज़ (SIFs) के पोषण संबंधी लाभों पर चर्चा में शामिल किया। उन्होंने इन मछलियों की खाद्य सुरक्षा और सामुदायिक स्वास्थ्य में योगदान पर जोर दिया। साथ ही, संस्थान की SIF जैवविविधता संरक्षण पहल को भी उजागर किया गया।

कार्यक्रम में डॉ. लियानथुआमलुइया और अन्य सीआईएफआरआई कर्मचारियों का सक्रिय समर्थन प्राप्त हुआ, जिससे सहयोगात्मक भावना प्रदर्शित हुई। लगभग साठ मत्स्यपालकों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम आईसीएआर-सीआईएफआरआई की सतत मत्स्य पालन और समावेशी विकास के माध्यम से जनजातीय सशक्तिकरण की प्रतिबद्धता को मजबूत करने वाला साबित हुआ। यह कार्यक्रम बिरसा मुंडा के दृष्टिकोण को सम्मान देने के साथ-साथ पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक अभ्यास के समन्वय के माध्यम से समुदाय कल्याण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने कच्छर कॉलेज, सिलचर (असम) के स्नातक छात्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), गुवाहाटी क्षेत्रीय केंद्र ने 10–14 नवंबर, 2025 को कच्छर कॉलेज, सिलचर, असम के स्नातक छात्रों के लिए "सतत मत्स्य पालन तकनीक और उद्यमिता विकास के अवसर" पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर -सीआईएफआरआई, बैरकपुर; डॉ. एस. के. मझी, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, गुवाहाटी; और डॉ. ए. नाग, प्राचार्य, कच्छर कॉलेज, सिलचर, असम के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. पी. दास, डॉ. एस.सी.एस. दास, डॉ. एस. बोरा और डॉ. एन. शर्मा, वैज्ञानिक, गुवाहाटी केंद्र ने किया। कॉलेज से समन्वयक के रूप में डॉ. एन. देबनाथ और डॉ. डी. भट्टाचार्य, सहायक प्रोफेसर, कच्छर कॉलेज ने योगदान दिया।

कार्यक्रम में कुल 19 छात्रों (जिनमें 14 छात्राएं शामिल थीं) ने भाग लिया। उद्घाटन सत्र 10 नवंबर, 2025 को आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. एस. के. मझी और डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने छात्रों को प्रशिक्षिण के लाभ उठाकर मत्स्य पालन और जलकृषि क्षेत्र में उद्यमिता विकास के अवसरों का अधिकतम उपयोग करने हेतु प्रेरित किया।

पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में सैद्धांतिक और प्रायोगिक दोनों सत्रों पर विशेष जोर दिया गया। सैद्धांतिक व्याख्यानों में निम्नलिखित विषय शामिल थे:

- अंतर्स्थलीय मत्स्य संसाधन और सतत मत्स्य पालन तकनीक में प्रगति
- मछलियों का शास्त्रीय और आणविक वर्गीकरण
- मृदा और जल गुणवत्ता का महत्व

- मत्स्य संवर्धन, पेन और केज कल्चर, बायोफ्लॉक तकनीक
- देशज सजावटी मछलियों का संवर्धन और एक्वेरियम पालन
- मत्स्य पालन में उद्यमिता के अवसर

पोषण प्रबंधन, डेटा विश्लेषण और पारिस्थितिकी संबंधी अध्ययन

प्रायोगिक सत्रों में मछली वर्गीकरण, जैविक और अजैविक कारकों का मूल्यांकन, और मृदा गुणवत्ता मापन शामिल थे।

फील्ड-एक्सपोजर विजिट 12 नवंबर, 2025 को कालोंग-कापिली, बोगिबारी, डिमोरिया ब्लॉक, कामरूप (म), असम में आयोजित किया गया, जहां छात्रों ने आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया, जो उद्यमिता विकास में सहायक हैं।

समापन सत्र 14 नवंबर, 2025 को आयोजित किया गया। डॉ. पी. दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक और सह-समन्वयक ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। छात्रों और कच्छर कॉलेज के संकाय सदस्यों ने प्रशिक्षण की जानकारीपूर्ण और उपयोगी सामग्री की सराहना की। छात्रों को प्रमाणपत्र वितरण कार्यक्रम में डॉ. एस. के. मझी और केंद्र के वैज्ञानिक एवं तकनीकी कर्मचारियों ने वितरित किए। कार्यक्रम धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने छात्रों को सतत मत्स्य पालन, उद्यमिता विकास और आधुनिक तकनीकों के व्यावहारिक ज्ञान से लैस करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

पुलिकट झील में देशज मछलियों के संरक्षण हेतु सामुदायिक जागरूकता और क्षेत्रीय सहभागिता

9–13 नवंबर, 2025 के दौरान, आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI) ने पुलिकट झील की देशज मछलियों के संरक्षण और सतत प्रबंधन पर जोर देते हुए एक सामुदायिक जागरूकता और क्षेत्रीय सहभागिता कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम संस्थान के चालू परियोजना "पुलिकट झील में जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में मछली विविधता, पर्यावरण और मछली भंडार में परिवर्तन का आकलन" (REF/24-27/18) के तहत आयोजित किया गया। पुलिकट झील, भारत के प्रमुख ब्रैकीशवाटर (अर्ध खारी पानी) आवासों में से एक है, जो जैव विविधता के संरक्षण के साथ-साथ हजारों मछुआरों की आजीविका का स्रोत भी है।

कार्यक्रम में 150 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें ICAR-CIFRI, बैरकपुर के वैज्ञानिक और कर्मचारी, स्थानीय मछुआरे, तथा तमिलनाडु मत्स्य विभाग के प्रतिनिधि शामिल थे। इन सभी का सक्रिय योगदान सामुदायिक सहभागिता बढ़ाने और संरक्षण पहलों पर सार्थक संवाद को बढ़ावा देने में सहायक रहा।

कार्यक्रम का उद्देश्य मछुआरों, स्थानीय संगठनों और अन्य हितधारकों के बीच पुलिकट झील की विविध देशज मछलियों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना था। पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने, आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने और सतत मत्स्य विकास को बढ़ावा देने के लिए इन आउटरीच गतिविधियों में देशज मछली संसाधनों के संरक्षण का महत्व, इंटरैक्टिव ज्ञान साझा करना, और पर्यावरण के अनुकूल मछली पकड़ने की विधियों का प्रदर्शन शामिल था।

स्थानीय शासन निकायों, सामुदायिक नेताओं और मछुआरों के सहकारी समितियों के प्रतिनिधियों की सक्रिय भागीदारी ने जिम्मेदार मत्स्य प्रबंधन के लिए आवश्यक सहयोग की भावना को मजबूत किया।

कार्यक्रम का संगठन आईसीएआर-सीआईएफआरआई के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने देखा। कार्यक्रम का समग्र समन्वय डॉ. एस. के. मन्ना, डॉ. डिबाकर भक्ता और श्री हंसराज कुमार ने किया। ICAR-CIFRI स्थानीय लोगों को सशक्त बनाकर और संरक्षण-उन्मुख गतिविधियों को प्रोत्साहित करके पुलिकट झील की मत्स्य संपदा के संरक्षण और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसके सततता सुनिश्चित करने के अपने संकल्प को रेखांकित करता है।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा पुलिकट झील का पारिस्थितिक और मत्स्य सर्वेक्षण

पुलिकट झील, देश की दूसरी सबसे बड़ी खारी (ब्रैकीशवाटर) लैगून, समृद्ध जैव विविधता का समर्थन करती है और मत्स्य पालन, आय और खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ समुद्री खाद्य प्रबंधन, प्रसंस्करण और व्यापार जैसे संबंधित क्षेत्रों के लिए आजीविका का स्रोत प्रदान करती है।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर की एक अनुसंधान टीम ने 9–13 नवंबर, 2025 के दौरान तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में झील के हिस्सों में व्यापक पारिस्थितिक और मत्स्य सर्वेक्षण किया। यह सर्वेक्षण संस्थान के चालू परियोजना "पुलिकट झील में जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में मछली विविधता, पर्यावरण और मछली भंडार में परिवर्तन का आकलन" के अंतर्गत किया गया। सर्वेक्षण का उद्देश्य मछली संसाधनों की वर्तमान स्थिति, आवासीय विशेषताओं, जल और तलछट की गुणवत्ता का दस्तावेजीकरण करना था।

सर्वेक्षण में उच्च जल स्तर, विभिन्न स्थलों पर लवणता में व्यापक अंतर, और ग्रीष्मकालीन मौसम की तुलना में कम मछली पकड़ने के प्रयास देखे गए। मछली पकड़ना मुख्य रूप से पुरुष मछुआरों द्वारा किया जाता है, जबकि महिलाएं पकड़ की छंटाई और बिक्री में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मछुआरे पारंपरिक मछली पकड़ने की तकनीक और उपकरणों का उपयोग करते हैं, जो झील के उथले, कम लवणता वाले और अक्सर गंदे जल परिस्थितियों के अनुकूल हैं।

सर्वेक्षण में पुलिकट झील के विभिन्न क्षेत्रों में 61 पंखीय मछली प्रजातियां पाई गईं, जो झील की मछली विविधता को दर्शाती हैं। पकड़ में मलेट्स (*Mugil cephalus, Planiliza*

subviridis) 29.51% के साथ प्रमुख थे, इसके बाद कारंगिड्स जैसे *Alepes djedaba* और *Caranx ignobilis* (18.30%), टाइगरपर्चेस (9.84%) और सिगनिड्स (13.11%) थे। मिल्कफिश (Chanos chanos) पकड़ का 2.43% थी।

सर्वेक्षण में यह भी देखा गया कि विदेशी प्रजातियों जैसे नाइल टिलापिया (Oreochromis niloticus) और अफ्रीकी कैटफिश (Clarias gariepinus) की पकड़ बढ़ रही है, जिससे इनके सतत निगरानी और प्रबंधन की आवश्यकता है। आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के मत्स्य विभागों द्वारा नैतिक मछली पकड़ने की प्रथाओं को बढ़ावा देने, पकड़ पर नियंत्रण रखने और संवेदनशील आवासों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इस क्षेत्रीय सर्वेक्षण का कार्य संजिब कुमार मन्ना, डिबाकर भक्ता और हंसराज कुमार ने डॉ. बासंता के. दास, निदेशक, आईसीएआर -सीआईएफआरआई के मार्गदर्शन में किया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा जनजातीय मत्स्यपालकों को सजावटी मछली संवर्धन पहल के माध्यम से सशक्त बनाना

बीरभूम जिला, जिसे अत्यधिक जलवायु परिस्थितियों के कारण अधिकांश कृषि भूमि वर्ष के बड़े हिस्से में शुष्क रहती है, पश्चिम

बंगाल के पिछड़े जिलों में से एक के रूप में चिन्हित है। जिले की अनुसूचित जनजाति (ST) आबादी लगभग 7% है। इन संवेदनशील ग्रामीण समुदायों का समर्थन करने के लिए, आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर ने मत्स्यपालन सामग्री और वैज्ञानिक तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने की पहल की है, ताकि वैकल्पिक आजीविका के अवसर उत्पन्न किए जा सकें।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने A.K. दासगुप्ता केंद्र, योजना एवं विकास, विश्वभारती, शांतिनिकेतन के सहयोग से 14 नवंबर

2025 को अनुसूचित जनजाति घटक (STC) के तहत शांति निकेतन में संसाधन वितरण और जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

इस पहल के तहत 30 जनजातीय मत्स्यपालकों को सजावटी मछली टैंक और कल्चर किट प्रदान की गई, जिससे सजावटी मछली पालन के माध्यम से स्थायी आजीविका का विकास किया जा सके। कार्यक्रम का उद्देश्य आय सृजन बढ़ाना, उद्यमिता को प्रोत्साहित करना और जनजातीय लाभार्थियों में तकनीकी कौशल विकसित करना था।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई और विश्वभारती के विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को वैज्ञानिक मछली पालन प्रथाओं, टैंक रखरखाव और सजावटी मछली के बाजार संभावनाओं के बारे में जागरूक किया। अपने संबोधन में डॉ. अपर्णा रॉय, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने इस पहल के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि सजावटी मछली पालन छोटे मत्स्यपालकों के लिए पर्यावरण-अनुकूल और आर्थिक रूप से व्यवहार्य आजीविका का अवसर प्रदान करता है और उचित प्रशिक्षण और समर्थन के साथ यह स्थिर आय का स्रोत बन सकता है।

प्रोफेसर बिधान चंद्र रॉय, चेयर प्रोफेसर, AKD केंद्र ने प्रतिभागियों को उत्साहित करते हुए संस्थागत समर्थन जारी रखने का आश्वासन दिया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई विशेषज्ञों द्वारा किए गए व्यावहारिक प्रदर्शन सत्र में प्रतिभागियों ने सजावटी मछली पालन का हैंड्स-ऑन अनुभव प्राप्त किया। सत्र के दौरान श्री लोकनाथ चक्रवर्ती, STO, CIFRI ने लाभार्थियों से बातचीत की और उनके तकनीकी सवालों का समाधान किया।

यह कार्यक्रम जनजातीय प्रतीक भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में आयोजित जनजातीय गौरव वर्ष (1–15 नवम्बर 2025) के अंतर्गत आयोजित किया गया। इस आयोजन ने उनके जनजातीय अधिकारों के प्रति योगदान को उजागर किया और आईसीएआर-सीआईएफआरआई की नवोन्मेषी और सतत मत्स्य आधारित आजीविका मॉडल के माध्यम से जनजातीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को सुधारने की प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित किया।

कार्यशाला के समापन पर सेसा नदी के मछुआरों ने इस पहल के लिए आईसीएआर-सीआईएफआरआई एवं बीसीपीएल के प्रति आभार व्यक्त किया। मछुआरों ने कार्यशाला पर संतोष व्यक्त करते हुए यह अपेक्षा भी जताई कि दोनों संस्थान भविष्य में सेसा नदी के सीमांत मछुआरों के विकास हेतु मिलकर कार्य करते रहेंगे।

किसान–वैज्ञानिक संवाद बैठक का आयोजन और पीएम-किसान योजना की 21वीं किस्त का लाइव टेलीकास्ट

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर ने किसानों और वैज्ञानिकों के बीच संवाद बैठक का आयोजन किया, जो प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN) योजना की 21वीं किस्त के राष्ट्रीय कार्यक्रम के साथ समन्वित था। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोयम्बटूर, तमिलनाडु से डिजिटल माध्यम से 9 करोड़ से अधिक किसानों के खाते में ₹18,000 करोड़ से अधिक राशि हस्तांतरित की।

ICAR-CIFRI ने अपने बैरकपुर परिसर में इस लाइव टेलीकास्ट का आयोजन किया, ताकि योजना के प्रति जागरूकता बढ़ाई जा सके और किसानों को नियमित आय सहायता के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का संदेश दिया जा सके। इस कार्यक्रम में 220 मत्स्यपालक, जिनमें 27 महिलाएं और 193 पुरुष शामिल थे, जिन्होंने खालसी, सिंद्रानी, कुमिली, चामटा, चमारदाहा और आकाइपुर जलाशयों से भाग लिया।

लाइव टेलीकास्ट से पहले, NAAS कोलकाता चैप्टर के तहत एक किसान–वैज्ञानिक संवाद सत्र आयोजित किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI ने की। इसमें वैज्ञानिक डॉ. श्रीकांत समंता, डॉ. आर. के. मन्ना, डॉ. एस. के. मन्ना, डॉ. अर्चना सिन्हा और डॉ. अरमान उल्लाह मुजद्दादी ने किसानों से सीधे संवाद किया।

किसानों ने मौसमी बदलाव, मछली रोग, प्रजनन समस्याएँ, उत्पादन हानि और बाजार संबंधित चुनौतियों जैसी फील्ड स्तर की समस्याओं को साझा किया। वैज्ञानिकों ने बेहतर तालाब प्रबंधन, प्रारंभिक रोग पहचान, सुरक्षित उपचार, हानिकारक रासायनिक कीट नाशकों से बचाव, प्रजनन प्रबंधन, नर–मादा देखभाल, स्वच्छ जल बनाए रखने

और तनाव कम करने पर व्यावहारिक सलाह दी। नादोष और मागुर जैसी प्रजातियों में होने वाले रोगों और उनके रोकथाम एवं उपचार उपायों पर भी व्यापक चर्चा हुई।

बील मत्स्य पालन प्रबंधन महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभरा, जिसमें वैज्ञानिक वैज्ञानिक स्टॉकिंग घनत्व, आवास संरक्षण और समुदाय आधारित जलाशय प्रबंधन पर जोर दिए। उन्होंने मछली चोरी जैसी समस्याओं को रोकने के लिए सामूहिक समुदायिक प्रयासों को भी प्रोत्साहित किया।

इस कार्यक्रम ने दो पहलुओं—PM-KISAN के माध्यम से वित्तीय समर्थन और ICAR-CIFRI से वैज्ञानिक मार्गदर्शन—की पूरक भूमिका को उजागर किया। जहां PM-KISAN किसानों को वित्तीय जोखिम कम करने और आवश्यक इनपुट्स में निवेश करने में मदद करता है, वहीं वैज्ञानिक परामर्श उत्पादकता बढ़ाने और सतत मत्स्य पालन प्रथाओं को अपनाने में सहायता करता है।

कुल मिलाकर, इस कार्यक्रम ने किसानों में जागरूकता बढ़ाई, आत्मविश्वास मजबूत किया और किसानों और वैज्ञानिक संस्थानों के बीच बेहतर संबंध स्थापित किए, जिससे अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन पर अधिक स्थायी और सक्षम आजीविका सुनिश्चित हुई।

संस्थान के कोच्चि, केरल स्थित केंद्र में डॉ. मोहम्मद मुसलम उद्दिन, प्रोफेसर, ओशनोग्राफी विभाग, चिट्टागाँग विश्वविद्यालय, बांग्लादेश के साथ इंटरैक्टिव बैठक

14 नवंबर 2025 को ICAR-CIFRI, कोच्चि में डॉ. मोहम्मद मुसलम उद्दिन के साथ एक इंटरैक्टिव बैठक आयोजित की गई। बैठक में डॉ. थानकम थेरेसा पॉल, वरिष्ठ वैज्ञानिक और श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला, वैज्ञानिक ने उन्हें केन्द्र और संस्थान की गतिविधियों, विशेषकर देश की नदी, जलाशय, फ्लडप्लेन और एस्टुअरीन सिस्टम से संबंधित अनुसंधान पहलों के बारे में अवगत कराया।

डॉ. उद्दिन ने संस्थान के जलवायु परिवर्तन, पिंजरा और पेन कल्चर तकनीक, तथा विकासात्मक और आउटरीच गतिविधियों में विशेष रुचि दिखाई। उन्होंने इंटीग्रेटेड मल्टी-ट्रोफिक एक्वाकल्चर (IMTA) और विभिन्न मत्स्य सुधार तकनीकों में सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

बैठक में डॉ. एल. एन. मूर्ति, प्रमुख, क्षेत्रीय केन्द्र, बेंगलुरु के साथ ऑनलाइन संवाद भी शामिल था, जिसमें उन्होंने प्रायद्वीपीय क्षेत्र में अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन का ऐतिहासिक परिचय दिया। बैठक में बांग्लादेश के साथ अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में सहयोग और नेटवर्किंग के अवसरों पर भी चर्चा हुई।

पूरे कार्यक्रम का सफल समन्वय डॉ. थानकम थेरेसा पॉल और श्रीमती तनुजा अब्दुल्ला ने किया।

श्यामनगर एक्वाकल्चर कॉम्प्लेक्स, पश्चिम बंगाल में "मछली रोग निदान प्रदर्शन" पर फील्ड डे का आयोजन

18 नवंबर 2025 को ICAR-CIFRI ने श्यामनगर एक्वाकल्चर कॉम्प्लेक्स में "मछली रोग निदान प्रदर्शन" पर एक फील्ड डे आयोजित किया। इस कार्यक्रम में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, झारखंड; देव भूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, उत्तराखंड; संजीवनी मत्स्य विकास सहकारी समिति, महाराष्ट्र; पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल; और विद्यापीठ, पश्चिम बंगाल के प्रशिक्षु प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस प्रदर्शन का उद्देश्य छात्रों, शोधकर्ताओं और उद्यमियों को संक्रामक मछली रोगों के फील्ड स्तर पर निदान, सैंपलिंग तकनीक, और पर्यावरण और मछली स्वास्थ्य पैरामीटर के विश्लेषण में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना था।

फील्ड डे और प्रदर्शन कार्यक्रम का संचालन डॉ. ए. के. बेर, प्रधान वैज्ञानिक, डॉ. एम. शया देवी, वैज्ञानिक, डॉ. निलेश दास, और श्री अभिजीत कुमार गुप्ता, तकनीशियन की टीम ने किया, जिनका मार्गदर्शन डॉ. बी. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI ने किया।

डॉ. ए. के. बेरा ने प्रशिक्षुओं को क्लिनिकल जानकारी एकत्र करने और रोगग्रस्त मछलियों के सैंपलिंग की विधि समझाई।

डॉ. एम. शया देवी ने बैक्टीरिया, वायरस और फंगल पैथोजन की पहचान हेतु रोगग्रस्त मछलियों के सैंपलिंग और संग्रहण का व्यावहारिक प्रदर्शन किया।

डॉ. निलेश दास ने श्यामनगर एक्वाकल्चर कॉम्प्लेक्स में स्थानीय लघु मछली प्रजातियों का प्रजनन और मछली पालन गतिविधियों की जानकारी दी।

श्री अभिजीत कुमार गुप्ता ने रोग मछली सैंपलिंग और प्रशिक्षण के दौरान छात्रों, शोधकर्ताओं और उद्यमियों का मार्गदर्शन किया।

इस कार्यक्रम ने प्रतिभागियों को मछली रोग प्रबंधन में व्यावहारिक कौशल और फील्ड में रोग निदान का अनुभव प्रदान किया।

ICAR-CIFRI ने आगारतला में "तनाव-मुक्त मछली परिवहन प्रणाली" पर कार्यशाला का आयोजन किया

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), बैरकपुर ने त्रिपुरा सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से 19 नवंबर, 2025 को "तनाव-मुक्त मछली परिवहन प्रणाली: हितधारक परामर्श-सह-प्रदर्शन" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन मत्स्य निदेशालय, पी. एन. कॉम्प्लेक्स, आगारतला में किया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हितधारकों के बीच ICAR-CIFRI द्वारा विकसित पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के माध्यम से सुरक्षित और परेशानी-मुक्त मछली परिवहन के लिए जागरूकता बढ़ाना और आजीविका सुधारना था।

कार्यशाला में ICAR-CIFRI द्वारा विकसित एक अद्वितीय हर्बल सेडेटिव एवं एनेस्थेटिक उत्पाद 'CIFRI Fish Tanavhari' का प्रदर्शन किया गया, जिसे डॉ. बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है। यह उत्पाद मछली के स्वास्थ्य पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालता और मछलियों को सामान्य स्थिति में जल्दी पुनः स्वस्थ कर देता है।

कार्यक्रम में 105 प्रतिभागी उपस्थित थे, जिनमें ICAR-CIFRI के वैज्ञानिक, आगारतला के कॉलेज ऑफ फिशरीज के

अकादमिक, मत्स्य विभाग के अधिकारी, हैचरी मालिक, जीवित मछली एवं बीज परिवहनकर्ता शामिल थे, जो त्रिपुरा के आठ जिलों से आए थे। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बि. के. दास, ARS, निदेशक, ICAR-CIFRI ने त्रिपुरा सरकार के मत्स्य निदेशक श्री. एस. दास, IAS तथा विभागीय अधिकारियों की उपस्थिति में किया।

तकनीकी सत्र में डॉ. बि. के. दास, निदेशक, ICAR-CIFRI ने संस्थान के कार्य और पिछले वर्षों में विकसित कई नवाचारों और किसान-अनुकूल उत्पादों के बारे में जानकारी दी, मुख्य रूप से 'CIFRI Fish Tanavhari' पर विशेष जोर दिया। उन्होंने तनाव -मुक्त मछली परिवहन प्रणाली पर व्यापक प्रस्तुति दी और बताया कि यह कार्यशाला किसानों द्वारा पिछले गुवाहाटी गवर्नर कौंक्लेव में उठाए गए प्रश्नों का समाधान है। उल्लेखनीय है कि 17 अक्टूबर, 2025 को गुवाहाटी में इसी प्रकार की कार्यशाला आयोजित की गई थी, जिसमें असम के हितधारकों की अच्छी भागीदारी रही।

कार्यशाला में डॉ. एच. चौधरी, प्रधान वैज्ञानिक, ICAR-CIFRI, बैरकपुर ने 'CIFRI Fish Tanavhari' के नवाचार के पीछे की पृष्ठभूमि बताई और इसे लाइव प्रदर्शन किया। इसके साथ डॉ. एस. सी. एस. दास और ग्लैकस प्रा. लिमिटेड, कोलकाता के अधिकारी भी शामिल थे। किसानों और विभागीय अधिकारियों ने वैज्ञानिकों और ग्लैकस प्रा. लिमिटेड की टीम के साथ संवाद किया और उत्पाद के बाज़ार प्रदर्शन पर चर्चा की।

कार्यक्रम में त्रिपुरा सरकार के श्री एस. दास, IAS, निदेशक मत्स्य विभाग; श्री ए. देबरमा, संयुक्त निदेशक मत्स्य विभाग; डॉ. एच. प्रीयदर्शी, सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ फिशरीज, आगारतला; श्री एस. देबरमा, FDO; श्री एच. सरकार, सुप्रीटेंडेंट ऑफ फिशरीज; मत्स्य अधिकारी; किसान; हैचरी मालिक; मछली परिवहनकर्ता और विक्रेता उपस्थित थे और उन्होंने ICAR-CIFRI द्वारा विकसित हर्बल उत्पाद की सराहना की।

इस उत्पाद से जीवित मछलियों के परिवहन के दौरान ऑक्सीजन प्लास्टिक बैग में होने वाली मछली मृत्युदर की समस्या का समाधान संभव होगा। इस अवसर पर कुल 120 बोतल (प्रत्येक 100ml) 'CIFRI Fish Tanavhari' हितधारकों में वितरित की गईं (किसानों को 31 बोतल, सरकारी अधिकारियों को 81 बोतल)। कार्यक्रम का समापन औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

असम के मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए 'बील मात्स्यिकी का सतत विकास' पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने असम सरकार के मत्स्य विभाग के सहयोग से राज्य के मत्स्य अधिकारियों के लिए 18–20 नवंबर, 2025 के दौरान 'सतत् बेल मत्स्य विकास' पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। यह कार्यक्रम एशियाई विकास बैंक (एडीबी) वित्त पोषित 'सतत् आर्द्रभूमि और एकीकृत मत्स्य परिवर्तन' (SWIFT) परियोजना के अंतर्गत आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बराकपुर; श्री गौरी शंकर दास, एसीएस, निदेशक मत्स्य विभाग, असम; डॉ. एस. के. माजी, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई RC, गुवाहाटी और डॉ. आर. सी. बर्मन, संयुक्त निदेशक, मत्स्य विभाग, असम के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम का समन्वय डॉ. सिमांकु बोरा, वैज्ञानिक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई; श्री खनींद्र

भुयां और श्री दिव्यज्योति देव नाथ, मत्स्य विकास अधिकारी द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 मत्स्य अधिकारी (8 महिला अधिकारी सहित) ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 18 नवंबर, 2025 को आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. काव्यश्री महंता, IAS, सचिव, मत्स्य विभाग, असम सरकार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रही। उन्होंने अधिकारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम का पूरा लाभ उठाने, अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने और राज्य के मत्स्य क्षेत्र के विकास के लिए उत्साहपूर्वक कार्य करने का आग्रह किया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने अपने संबोधन में सतत् बेल मत्स्य विकास के लिए सह-प्रबंधन (co-management) दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. एस. के. माजी, प्रमुख, आईसीएआर-सीआईएफआरआई गुवाहाटी, डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. आर. सी. बर्मन, संयुक्त निदेशक, मत्स्य विभाग ने अधिकारियों को संसाधन व्यक्तियों के साथ संवाद करने और अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रेरित किया।

तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान बेल मत्स्य के समग्र और सतत् प्रबंधन पर जोर दिया गया। कार्यक्रम में बेल मत्स्य के प्रबंधन प्रोटोकॉल, मैक्रोफाइट नियंत्रण, मत्स्य रोग प्रबंधन, पर्यावरण निगरानी, मछली का बीज उत्पादन, सामुदायिक आधारित मत्स्य प्रबंधन, इंजीनियरिंग पहलू और मानव पोषण में मछली के महत्व जैसे महत्वपूर्ण विषय शामिल थे।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन सत्र 20 नवंबर, 2025 को आयोजित किया गया। समापन सत्र में डॉ. सिमांकु बोरा, वैज्ञानिक और कार्यक्रम समन्वयक ने प्रशिक्षण का संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि श्री गौरी शंकर दास, एसीएस, निदेशक मत्स्य विभाग, असम ने बेल मत्स्य और राज्य के मत्स्य क्षेत्र में व्यापक विकास की संभावना पर जोर दिया और सभी अधिकारियों से सहयोगपूर्ण और पूर्ण समर्पण के साथ कार्य करने का आग्रह किया। राज्य के मत्स्य अधिकारियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम से संतोष व्यक्त किया।

संदरबन में महिला मत्स्यपालकों को सशक्त बनाना: आईसीएआर-सीआईएफआरआई का महिला मत्स्यजीबी सम्मेलन 3.0

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), बैरकपुर ने **महिला मत्स्यजीबी सम्मेलन 3.0** (महिला मत्स्यपालक सम्मेलन) का आयोजन किया, जो विश्व मत्स्य दिवस के अवसर पर कुलटाली, संदरबन में **कुलटाली मिलनतीर्थ सोसाइटी** के सहयोग से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम ने संदरबन में जलवायु संवेदनशील परिस्थितियों में महिला मत्स्यपालकों की अहम भूमिका और उनके योगदान को उजागर किया, जो ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने में महत्वपूर्ण हैं।

कार्यक्रम का उद्घाटन **डॉ. जॉयकृष्ण जेना**, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), आईसीएआर और **डॉ. राजबीर सिंह**, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार), आईसीएआर ने क्रमशः मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के रूप में किया। उत्साहपूर्ण भागीदारी की सराहना करते हुए, **डॉ. जेना** ने कहा, “हमारी महिला मत्स्यपालकों की प्रतिबद्धता दिखाती है कि मछली और मत्स्य पालन संदरबन की आजीविका से कितनी गहराई से जुड़ा हुआ है। आईसीएआर यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि मत्स्य और मत्स्य विज्ञान में वैज्ञानिक प्रगति प्रत्येक समुदाय तक पहुंचे, जिससे टिकाऊ और सुदृढ़ विकास संभव

हो।” उन्होंने यह भी दोहराया कि क्षेत्र के आईसीएआर संस्थान और कृषि विज्ञान केंद्र (KVK) प्रौद्योगिकी प्रसार में पूर्ण सहयोग देंगे।

डॉ. राजबीर सिंह, उप महानिदेशक (कृषि विस्तार) ने कहा, “महिलाओं को मत्स्य पालन, मत्स्य पकड़, प्रसंस्करण और विपणन में समर्थन दिया जा रहा है। ब्लू इकॉनॉमी संदरबन में मत्स्य क्षेत्र में महिलाओं के लिए नए और सतत अवसर उत्पन्न कर रही है।”

अतिथियों का स्वागत करते हुए, **डॉ. बि. के. दास**, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने संस्थान के पिछले दस वर्षों के हस्तक्षेपों को रेखांकित किया, जिसमें गोसाबा, हिंगलगुंज, नमखाना, काकद्वीप और कुलटाली में **बैकयार्ड तालाब संस्कृति, नहर मत्स्य पालन और सजावटी मछली उत्पादन** शामिल हैं। उन्होंने कहा, “हमारा ध्यान मत्स्यपालकों, विशेषकर महिला मत्स्यपालकों को सशक्त बनाने पर है, ऐसे विज्ञान के माध्यम से जो सुलभ, अनुकूलनीय और संदरबन की वास्तविकताओं में आधारित हो।” इस अवसर पर महिला प्रतिभागियों ने भी अपने अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम के दौरान, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने **600 एससी और एसटी महिला मत्स्यपालकों** को **मछली के फिंगरलिंग्स और CageGrow फीड** वितरित किया, जिनके बैकयार्ड तालाब का क्षेत्रफल 0.02–0.04 हेक्टेयर था। लाभार्थियों का चयन गोसाबा और बसंती ब्लॉकों के 17 ग्राम पंचायतों के 38 गांवों से किया गया। आईसीएआर-सीआईएफआरआई के वैज्ञानिकों ने प्रत्येक तालाब का दौरा किया और मछली की उत्पादकता बढ़ाने और आय सुदृढ़ करने के लिए विशेष तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया।

कार्यक्रम में 4,500 से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए, जिनमें अधिकारी, आईसीएआर वैज्ञानिक, छात्र और सामुदायिक नेता शामिल थे। विशिष्ट अतिथियों जैसे **डॉ. प्रदीप डे**, निदेशक, ATARI और **श्री अजय कुमार सिन्हा**, SBI, बरुईपुर ने निरंतर संस्थागत समर्थन का संकल्प लिया।

महिला मत्स्यजीबी सम्मेलन 3.0 ने महिलाओं के सशक्तिकरण, सतत मत्स्य पालन और संदरबन पारिस्थितिकी तंत्र में सामुदायिक लचीलापन सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्थापित किया। इस सम्मेलन के माध्यम से महिला मत्स्यपालक मत्स्य क्षेत्र में सक्रिय हितधारक बन रही हैं, जिससे **विकसित भारत@2047** के समावेशी विकास की व्यापक दृष्टि को समर्थन मिलता है।

मछलियों के संक्रामक रोगों के निदान तकनीक: आईसीएआर-सीआईएफआरआई का कौशल विकास प्रशिक्षण

आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), बैरकपुर ने 17 से 21 नवंबर 2025 तक "मछलियों के संक्रामक रोगों के निदान तकनीक" पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण में कुल 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें शोधकर्ता, छात्र और उद्यमी शामिल थे। प्रतिभागी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय (झारखंड), देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय (उत्तराखंड), संजीवनी मत्स्य विकास सहकारी समिति (महाराष्ट्र), पश्चिम बंगाल पशु एवं मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय (पश्चिम बंगाल) और विद्यासागर विश्वविद्यालय (पश्चिम बंगाल) से शामिल हुए।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 17 नवंबर को किया। उन्होंने मछली स्वास्थ्य सुरक्षा में रोग निदान की अहम भूमिका को रेखांकित किया, विशेषकर अंतर्स्थलीय खुली जल प्रणाली में।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों को मछली रोग निदान की मूल बातें सिखाना था, साथ ही जल पर्यावरण के जैविक और अजैविक घटकों की निगरानी के महत्वपूर्ण मानकों की स्पष्ट समझ प्रदान करना था। 18 नवंबर को श्यामनगर अक्वाकल्चर कॉम्प्लेक्स, पश्चिम बंगाल में फील्ड डे आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को क्षेत्र स्तर पर रोग निदान और मछली रोगों के नमूनाकरण का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में सैद्धांतिक सत्रों के साथ व्यापक व्यावहारिक प्रदर्शन शामिल था, जिसमें पर्यावरण और मछली स्वास्थ्य मूल्यांकन के लिए नमूनाकरण तकनीकें और प्रयोगशाला आधारित निदान विधियाँ शामिल थीं। प्रतिभागियों ने विभिन्न तकनीकों का अनुभव प्राप्त किया, जैसे कि बैक्टीरिया और फंगस का पृथक्करण, एंटीमाइक्रोबियल संवेदनशीलता परीक्षण, डीएनए पृथक्करण, लक्षित जीनों का पोलिमरेज़ चेन रिएक्शन (PCR), जेल इलेक्ट्रोफोरेसिस और अनुक्रम विश्लेषण।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, के कुल पर्यवेक्षण में प्रशिक्षण का सफल समन्वय डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. एम. शाया देवी, वैज्ञानिक ने किया।

फील्ड और प्रयोगशाला में व्यावहारिक प्रदर्शन के दौरान तकनीकी सहायता श्री अभिजीत कुमार गुप्ता द्वारा प्रदान की गई।

विश्व एन्टीमाइक्रोबियल जागरूकता सप्ताह 2025 (18–24 नवम्बर) के दौरान आयोजित जागरूकता कार्यक्रम – आईसीएआर-सीआईएफआरआई

विश्व एन्टीमाइक्रोबियल जागरूकता सप्ताह 2025 18–24 नवम्बर 2025 को सफलतापूर्वक मनाया गया, जिसका वैश्विक विषय था: *"अभी कार्रवाई करें: हमारे वर्तमान की सुरक्षा करें, हमारे भविष्य की सुरक्षा करें"*।

संस्थान के प्रशिक्षुओं, मछुआरों, कॉलेज के छात्रों और कर्मचारियों के लिए एक श्रृंखला कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनका उद्देश्य एएमआर (एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टेंस) के प्रभाव, इसके मानव, पशु और जलीय स्वास्थ्य पर प्रभाव, और मत्स्य पालन तथा जलीय कृषि में जिम्मेदार एंटीमाइक्रोबियल उपयोग की भूमिका को समझाना था।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के मार्गदर्शन में सभी कार्यक्रमों का संचालन डॉ. ए. के. साहू, प्रधान वैज्ञानिक; डॉ. ए. के. बेरा, प्रधान वैज्ञानिक; डॉ. पलाश घोषाई, यंग प्रोफेशनल-II; और कन्या अनुश्का दास, यंग प्रोफेशनल-I द्वारा किया गया।

18 नवम्बर 2025 को, "विश्व एन्टीमाइक्रोबियल जागरूकता सप्ताह 2025" का उद्घाटन बैरकपुर स्थित आईसीएआर-सीआईएफआरआई में प्रशिक्षुओं के बीच हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत एक संक्षिप्त उद्घाटन सत्र के साथ हुई, जिसमें प्रतिभागियों को एएमआर जागरूकता सप्ताह के विषय से परिचित कराया गया।

डॉ. ए. के. बेरा, प्रधान वैज्ञानिक और AINP-AMR परियोजना के सह-पीआई ने विभिन्न क्षेत्रों में बढ़ती एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध की समस्या और "वन हेल्थ" दृष्टिकोण अपनाने के महत्व को रेखांकित किया—जिसमें मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को जोड़ा जाता है। प्रशिक्षुओं को जानकारीपूर्ण पर्चियाँ वितरित की गईं और वैज्ञानिकों एवं आईसीएआर-सीआईएफआरआई के संसाधन व्यक्तियों द्वारा इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए गए। कार्यक्रम ने प्रशिक्षुओं के एएमआर ज्ञान और एंटीमाइक्रोबियल दुरुपयोग के प्रति जागरूकता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया। प्रतिभागियों ने यह महसूस किया कि वे एएमआर के विकास को रोकने, सतत जलीय कृषि प्रथाओं को अपनाने और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य की सुरक्षा में अपनी भूमिका निभा सकते हैं।

21 नवम्बर 2025 को, एक जागरूकता कार्यक्रम सस्य श्यामला कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके), सोनारपुर में आयोजित किया गया। इसमें उपस्थित थे: डॉ. स्वगात घोष, प्रमुख केवीके; डॉ. तापस घोषाल, प्रमुख, ICAR-CIFE, सॉल्टलेक सेंटर; डॉ. समीरण बंद्योपाध्याय, प्रधान वैज्ञानिक, ICAR-ERS, IVRI; और डॉ. सबास्वरुप घोष, एसएमएस।

कार्यक्रम का उद्देश्य मछुआरों और प्रशिक्षुओं को एएमआर की बढ़ती चुनौती के प्रति जागरूक करना और कृषि व जलीय कृषि में जिम्मेदार प्रथाओं को बढ़ावा देना था। करीब 200 पम्पलेट वितरित किए गए।

डॉ. ए. के. बेरा, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. पलाश घोषाई, यंग प्रोफेशनल-II ने ग्रामीण स्तर पर जागरूकता के महत्व को उजागर करते हुए भाषण दिया। प्रतिभागियों ने एएमआर को लेकर बेहतर समझ विकसित की और सुरक्षित कृषि प्रथाओं को अपनाने की अपनी तत्परता जताई।

24 नवम्बर 2025 को, बैरकपुर राष्ट्रगुरु सुरेंद्रनाथ कॉलेज में एक जन-सामूहिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कॉलेज के सभी छात्र और शिक्षक एएमआर के कारण और परिणामों, तथा जिम्मेदार प्रथाओं के महत्व से sensitized किए गए।

कार्यक्रम की शुरुआत स्वागत संदेश के साथ हुई, उसके बाद एएमआर का महत्व और मानव, पशु और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर प्रभाव समझाया गया। प्रतिभागियों को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित किया गया कि रोजमर्रा के निर्णय, जैसे एंटीबायोटिक उपयोग, प्रतिरोध के प्रसार को कैसे प्रभावित कर सकते हैं। डॉ. ए. के. बेरा, प्रधान वैज्ञानिक और डॉ. पलाश घोषाई, यंग प्रोफेशनल-II ने एएमआर की मूल बातें, पर्यावरणीय चिंताएं, प्रसार, रोकथाम और जिम्मेदार एंटीबायोटिक उपयोग, साथ ही वन हेल्थ रणनीतियों और राष्ट्रीय कार्ययोजना पर जानकारीपूर्ण भाषण दिया। 150 प्रतिभागियों को जानकारीपूर्ण पर्चियाँ वितरित की गईं और सत्रों में सक्रिय चर्चा हुई। कार्यक्रम ने छात्रों में एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध के खतरों के प्रति जागरूकता बढ़ाई। प्रतिभागियों ने जिम्मेदार एंटीबायोटिक उपयोग, स्वच्छता और रोकथाम के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ सीखीं।

इस प्रकार, ICAR-CIFRI, KVK सोनारपुर और सुरेंद्रनाथ कॉलेज में आयोजित एएमआर जागरूकता सप्ताह के कार्यक्रमों ने करीब 500 प्रशिक्षुओं, मछुआरों और छात्रों को एंटीमाइक्रोबियल प्रतिरोध और जिम्मेदार प्रथाओं के प्रति शिक्षित किया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, प्रयागराज ने बिहार के 20 मछुआरों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया

ATMA प्रायोजित "फिश प्रोडक्शन कम रेसिडेंशियल इटिनेरेसी" प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन आईसीएआर-सीआईएफआरआई, प्रयागराज में

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (CIFRI), क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज ने 24–28 नवम्बर 2025 के दौरान ATMA प्रायोजित पांच-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "फिश प्रोडक्शन कम रेसिडेंशियल इटिनेरेसी" आयोजित किया। इस कार्यक्रम में बिहार के समस्तीपुर जिले के 20 मछुआरों ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र 24 नवम्बर, 2025 को आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष के रूप में शिरकत की। उद्घाटन भाषण में डॉ. बि. आर. चव्हाण, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र ने ATMA समस्तीपुर, बिहार से आए सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने केंद्र का संक्षिप्त परिचय दिया और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के उद्देश्य स्पष्ट किए।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर ने प्रतिभागियों को आश्वस्त किया कि उन्हें इनलैंड फिशरीज के क्षेत्र में आवश्यक सभी तकनीकी जानकारी, ज्ञान और समर्थन मिलेगा, जिससे उनकी दक्षता विकसित होगी।

कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. वी. आर. ठाकुर, वरिष्ठ वैज्ञानिक और डॉ. ए. आलम, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने किया, डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर और डॉ. बि. आर. चव्हाण, प्रमुख, क्षेत्रीय केंद्र, प्रयागराज के मार्गदर्शन में।

अगले पांच दिनों में, प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिभागियों को इनलैंड फिशरीज के वर्तमान स्थिति, कंपोजिट फिश कल्चर, वैल्यू एडिशन, ऑर्नामेंटल फिशरीज का महत्व, मछली रोग, मृदा और जल गुणवत्ता के पैरामीटर सहित विभिन्न तकनीकी और व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करेगा।

सिवान (बिहार) के मछुआरों को सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन का प्रशिक्षण

आईसीएआर–केंद्रीय अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई) द्वारा बिहार के सिवान जिले के 30 मछुआरों के लिए "अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" विषय पर सात-दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 जनवरी से 26 नवम्बर, 2025 तक राज्य मत्स्य विभाग के प्रायोजन में आयोजित किया गया।

यह कार्यक्रम डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई के समग्र मार्गदर्शन में आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य ग्रामीण मछुआरों के ज्ञान एवं कौशल को सुदृढ़ करना तथा उन्हें सतत एवं लाभकारी मत्स्य प्रबंधन की सर्वोत्तम वैज्ञानिक पद्धतियों से सुसज्जित करना था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. एस. समंता, निदेशक-प्रभारी, आईसीएआर-सीआईएफआरआई द्वारा डॉ. अर्चना सिन्हा, प्रमुख तथा डॉ. एस. के. मन्ना की उपस्थिति में किया गया। अपने संबोधन में डॉ. समंता ने अंतर्स्थलीय मत्स्य क्षेत्र में क्षमता निर्माण के महत्व पर बल दिया और प्रतिभागियों को मछली उत्पादन बढ़ाने, पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने तथा अपनी आजीविका में

सुधार हेतु वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जो किसानों की आय दोगुनी करने की राष्ट्रीय परिकल्पना के अनुरूप है।

डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने भी प्रशिक्षण के दौरान मछुआरों से संवाद किया और उन्हें उन्नत एवं पर्यावरण-अनुकूल जलीय कृषि तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा, *"अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन में ग्रामीण आजीविका को बदलने की अपार क्षमता है। वैज्ञानिक प्रबंधन पद्धतियों और आधुनिक तकनीकों को अपनाकर किसान उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि कर सकते हैं, साथ ही जलीय संसाधनों की स्थिरता भी सुनिश्चित कर सकते हैं।"*

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत अनेक तकनीकी विषयों को शामिल किया गया, जिनमें अंतर्स्थलीय खुले जल निकायों की पारिस्थितिकी एवं मत्स्यिकी, तलछट एवं जल रसायन, तालाब प्रबंधन, प्राकृतिक मछली आहार जीव, बिहार के लिए उपयुक्त जलीय कृषि प्रजातियाँ, एनक्लोजर कल्चर, ऑर्नामेंटल फिशरीज, मछली आहार प्रबंधन, मछली स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण तथा जलीय कृषि की आर्थिक मूल्यांकन पद्धतियाँ शामिल थीं। इसके अतिरिक्त, जलीय कृषि निगरानी एवं प्रबंधन में ड्रोन तकनीक के उपयोग पर विशेष सत्र भी आयोजित किए गए।

आर्द्रभूमि (वेटलैंड) प्रबंधन एवं उत्पादन वृद्धि पर विशेष जोर दिया गया, जिसमें सतत उपयोग, समुदाय आधारित शासन व्यवस्था, वैज्ञानिक स्टॉकिंग तथा मछली उत्पादन बढ़ाने हेतु आवास सुधार शामिल थे। प्रतिभागियों को महत्वपूर्ण पालन योग्य मछलियों के प्रजनन, ब्रूडस्टॉक प्रबंधन तथा गुणवत्तापूर्ण बीज उत्पादन हेतु हैचरी तकनीकों का भी प्रशिक्षण दिया गया।

संस्थान की ऑर्नामेंटल हैचरी इकाइयों एवं फीड मिल में व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए गए, जहाँ प्रतिभागियों ने जल गुणवत्ता विश्लेषण, स्थानीय संसाधनों से मछली आहार निर्माण, मछली रोगजनकों की पहचान तथा उनके उपचारात्मक उपायों का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया।

व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने हेतु प्रतिभागियों ने ईस्ट कोलकाता वेटलैंड्स, ऑर्नामेंटल फिश मार्केट, ऑर्नामेंटल फिश विलेज, कालना फिश फार्म, आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता क्षेत्रीय केंद्र तथा आईसीएआर-सीआईएफए, रहारा का भ्रमण किया, जिससे उन्हें विभिन्न जलीय कृषि एवं मत्स्य उत्पादन प्रणालियों की गहन समझ प्राप्त हुई।

प्रतिक्रिया सत्र के दौरान प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम पर अत्यधिक संतोष व्यक्त किया तथा बताया कि अंतर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन संबंधी उनके ज्ञान में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। उन्होंने अपने खेतों में अर्जित ज्ञान को लागू करने तथा अन्य मछुआरों के साथ साझा करने का विश्वास भी व्यक्त किया।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम डॉ. अपर्णा रॉय, वरिष्ठ वैज्ञानिक के पर्यवेक्षण में आयोजित किया गया तथा डॉ. कविता कुमारी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं डॉ. पियाशी देबरॉय, वैज्ञानिक द्वारा समन्वित किया गया। तकनीकी सहयोग श्री सुजीत चौधरी (सीटीओ), श्री मानबेन्द्र रॉय (टीओ), डॉ. अभिषेक साहा (एसटीए) तथा श्री पंकज कुमार द्वारा प्रदान किया गया।

आईसीएआर-सीआईएफआरआई, बैरकपुर में पंचवर्षीय समीक्षा दल (QRT) की बैठक आयोजित

वर्ष 2018–2023 की अवधि के लिए पंचवर्षीय समीक्षा दल (क्विनक्वेनीयल रिव्यू टीम—QRT) की बैठक 28–29 नवम्बर 2025 को आईसीएआर–सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), बैरकपुर में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता माननीय डॉ. डब्ल्यू. एस. लाकड़ा, पूर्व कुलपति एवं निदेशक, सीआईएफई ने की। समीक्षा दल के सम्मानित सदस्यों में डॉ. डब्ल्यू. विश्वनाथ, डॉ. वी. कृपा, डॉ. एस. एम. शिवप्रकाश, डॉ. एच. एस. मूर्ति तथा डॉ. एच. के. वार्दिया शामिल थे।

अध्यक्ष ने संस्थान की निरंतर प्रगति एवं समीक्षा अवधि के दौरान वैज्ञानिक प्रकाशनों में उल्लेखनीय वृद्धि की सराहना करते हुए बैठक का शुभारंभ किया। डॉ. बि. के. दास, निदेशक, आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने औपचारिक रूप से समीक्षा दल का स्वागत किया तथा संस्थान की प्रमुख उपलब्धियों एवं हालिया विकासात्मक प्रगति को रेखांकित किया। इसके पश्चात अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू. एस. लाकड़ा ने अपने संबोधन में संस्थान की बढ़ती राष्ट्रीय प्रासंगिकता, सुदृढ़ प्रकाशन रिकॉर्ड तथा बहुविषयक अनुसंधान संस्कृति की प्रशंसा की।

चायावकाश के बाद तकनीकी सत्र का आरंभ डॉ. अपर्णा रॉय, सदस्य सचिव, क्यूआरटी द्वारा प्रस्तुत *एक्शन टेकन रिपोर्ट* से हुआ। अध्यक्ष एवं सदस्यों ने रिपोर्ट की स्पष्टता तथा पूर्व अनुशंसाओं के प्रभावी कार्यान्वयन की

सराहना की। इसके बाद निदेशक द्वारा प्रस्तुत समग्र अनुसंधान गतिविधियों की प्रस्तुति को समीक्षा दल ने अत्यंत सराहा, विशेषकर प्रकाशनों में वृद्धि, विस्तार गतिविधियों के सुदृढ़ीकरण तथा राष्ट्रीय मत्स्य एवं जलीय संसाधन प्राथमिकताओं के अनुरूप अनुसंधान कार्यक्रमों के संरेखण के लिए।

अगले सत्रों में संस्थान के सभी अनुसंधान प्रभागों की प्रस्तुतियाँ हुईं। प्रभागाध्यक्षों डॉ. एस. समंता, डॉ. एस. के. मन्ना, डॉ. आर. के. मन्ना, डॉ. ए. मुजद्दादी, डॉ. ए. सिन्हा तथा डॉ. अरुण पंडित ने अपने-अपने कार्यों की जानकारी दी। समीक्षा दल ने प्रभागों में समग्र प्रगति, वैज्ञानिक पद्धतियों के सुदृढ़ीकरण, क्षेत्र-आधारित अनुसंधान के विस्तार तथा डेटा-आधारित दृष्टिकोण पर बढ़ते जोर को स्वीकार किया। प्रथम दिवस का समापन संस्थान की वैज्ञानिक प्रगति, संस्थागत अनुशासन तथा अंतर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान में उभरते नेतृत्व की प्रशंसा के साथ हुआ।

द्वितीय दिवस की शुरुआत प्रयोगशालाओं के भ्रमण एवं वैज्ञानिकों के साथ संवाद से हुई। समीक्षा दल के सदस्यों ने संस्थान की सुसज्जित सुविधाओं, उन्नत विश्लेषणात्मक उपकरणों तथा अनुसंधान कर्मियों की व्यावसायिक दक्षता पर संतोष व्यक्त किया और इसे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान एवं नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण बताया।

दोपहर सत्र में समीक्षा दल ने संस्थान के सीएओ एवं सीएफ एवं एओ के साथ संवाद किया। इसके पश्चात निदेशक एवं समीक्षा दल के सदस्यों ने संस्थान की प्रगति एवं भविष्य की दिशा पर अपने विचार साझा किए। समीक्षा दल ने अनुसंधान की व्यापकता एवं गहराई की सराहना करते हुए सहयोग विस्तार, प्रौद्योगिकी प्रसार तथा अंतर्विषयक पहलों को और सुदृढ़ करने का आग्रह किया।

बैठक का समापन अध्यक्ष डॉ. डब्ल्यू. एस. लाकड़ा के अंतिम संबोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने वैज्ञानिकों की प्रतिबद्धता, अनुसंधान गुणवत्ता में निरंतर सुधार तथा राष्ट्रीय मत्स्य विकास में संस्थान के बढ़ते योगदान की प्रशंसा की। अंत में डॉ. अपर्णा रॉय, सदस्य सचिव, क्यूआरटी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया, जिसके साथ दो दिवसीय समीक्षा बैठक का सफल समापन हुआ।

MAVERICK NEWS 30

Your Digital News Pulse : News for All

Empowering Communities Through Aquaculture: CIFRI's SCSP Initiative Supports SDG Goals in South 24 Parganas

Government of India
Press Information Bureau

Ministry of Fisheries, Animal Husbandry & Dairying

CIFRI's Aquaculture Model Supports SDG 1, 5, and 14 in South 24 Parganas, West Bengal

SSS/23.8.25/

(Release ID: 2160262)

प्रयागराज, बुधवार 13 अगस्त, 2025 2

नमामि गंगे के तत्वावधान में कार्प मछलियों के बीजों को गंगा नदी में छोड़ा गया

प्रयागराज। मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए भादकृदअनुदपद-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के द्वारा दिनांक बारह अगस्त दो हजार पच्चीस को पवित्र पावन गंगा और यमुना के संगम तट स्थित अरैल घाट पर गंगा नदी में पाँच हजार भारतीय प्रमुख कार्प - कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया,राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन एम सी जी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के वैज्ञानिक डा0 डी एन झा ने उपस्थित लोगों को नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी जिसके अन्तर्गत गंगा नदी और इसकी सहायक नदियों में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज का रैंचिंग होना रखा है साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में आगरूक करना है,केन्द्राध्यक्ष डा0 बी आर चह्वान ने समारोह में आये लोगों का स्वागत करते हुए को स्वच्छ रखने का शपथ दिलवाया,इस अवसर पर गंगा

खबर एखन
সা ন্ধ্য দৈ নি ক
সত্যতা যাচাই করে তবেই খবর খবরের ভেতরের খবর

আইসিএআর-সেন্ট্রাল ইনল্যান্ড ফিশারিজ রিসার্চ ইনস্টিটিউট দীর্ঘদিন ধরে দক্ষিণ ২৪ পরগনায় আড্ডিনার পুকুরকে দীর্ঘস্থায়ী আয়ের উৎসে রূপান্তর করার উদ্যোগ নিয়ে কাজ করছে। আগে পানীয় জলের জন্য ব্যবহৃত এই ছোট ছোট বর্ষানির্ভর পুকুর আজ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে মৎস্যচাষের মাধ্যমে পুষ্টি ও জীবিকার নতুন সম্ভাবনা তৈরি করছে। বারাকপুরে স্থিত সিফ্রি ও জয়গোপালপুর গ্রাম বিকাশ কেন্দ্র যৌথভাবে সুন্দরবনের বাসন্তী ব্লকে এক বৃহৎ গণসচেতনতামূলক কর্মসূচি আয়োজন করে। ১১টি গ্রামের ৩০০ জন প্রান্তিক সুন্দরবনের মানুষ অংশ নেন। এর মধ্যে ১০০ জন তফসিলি জাতি ও ২০০ জন তফসিলি উপজাতি পরিবারকে ৬ কেজি ভারতীয় প্রধান কার্প (রুই, কাতলা ও মৃগেল) মাছের বাচ্চা এবং ৮০ কেজি খাদ্য সরবরাহ করা হয়। উপস্থিত ছিলেন সিফ্রির ডিরেক্টর ড. বি কে দাস। এনজিওর সম্পাদক বিশ্বজিৎ মাহাকুর গ্রামীণ মহিলাদের ক্ষমতায়নে প্রকল্পটির ভূমিকার প্রশংসা করেন। এ ছাড়াও ড. প্রণয়া পারিদা, ড. লিয়ানথুমলুয়াইয়া ও ড. দিবাকর ভক্তা গ্রামবাসীদের পুকুর ব্যবস্থাপনা, খাদ্য ব্যবহার ও মাছের স্বাস্থ্য নিয়ে হাতে-কলমে প্রশিক্ষণ দেন।

AgroSpectrum

ASEAN Landscape & Gardening Expo

PM-KISAN Utsav Diwas celebrated in Kolkata with focus on fisheries and farmer welfare

The ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI), Barrackpore, in collaboration with the ICAR-Central Institute of Fisheries Education (CIFE), Kolkata Centre, observed 'PM-KISAN Utsav Diwas' on Saturday, marking a significant outreach initiative under the Pradhan Mantri Kisan Samman Nidhi (PM-KISAN) scheme.

The event was graced by Rajiv Ranjan Singh, Hon'ble Union Minister for Fisheries, Animal Husbandry and Dairying, and Panchayati Raj. Addressing the gathering, the Minister reaffirmed the Centre's unwavering commitment to the economic empowerment of farmers and fishers across India. He also interacted with fishers and fish farmers and highlighted the critical role of fisheries in rural employment and livelihood generation.

The programme saw the participation of 81 fishers and fish farmers from South 24 Parganas district, alongside scientists and technical officers from both ICAR-CIFRI and ICAR-CIFE. The event was formally inaugurated with the traditional watering of a holy plant Tulsi by the Hon'ble Minister.
One of the key highlights of the day was the virtual address by Prime Minister Narendra Modi , which was broadcast live to over 2 crore farmers across the country through video conferencing. Farmers connected via ICAR institutions, Krishi Vigyan Kendras (KVKs), agricultural universities, PM Kisan Samriddhi Kendras, and Primary Agricultural Cooperative Societies.

During his address, the Prime Minister announced the release of the 20th instalment of the PM-KISAN scheme, amounting to Rs 20,500 crore, benefitting over 9.7 crore farmers nationwide. West Bengal alone accounted for 44.78 lakh beneficiaries. Many of the farmers present received real-time SMS confirmations of the credited amount.

Following the Prime Minister's address, Shivraj Singh Chouhan, Union Minister of Agriculture and Farmers Welfare, interacted with farmers from different states. He responded to their queries and urged them to adopt sustainable and integrated agricultural practices. He also encouraged them to avail themselves of other government schemes such as the Kisan Credit Card (KCC), Pradhan Mantri Matsya Sampada Yojana (PMMSY) and PM-KISAN.

The event in Kolkata was jointly coordinated by Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, and Dr. T. K. Ghoshal, Head, ICAR-CIFE Kolkata Centre, along with their teams . Dr. Das stressed on the importance of linking fisheries research with field-level outreach and government support to ensure inclusive development, especially in the inland and estuarine fishing sectors.

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फ़क्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जासकती है